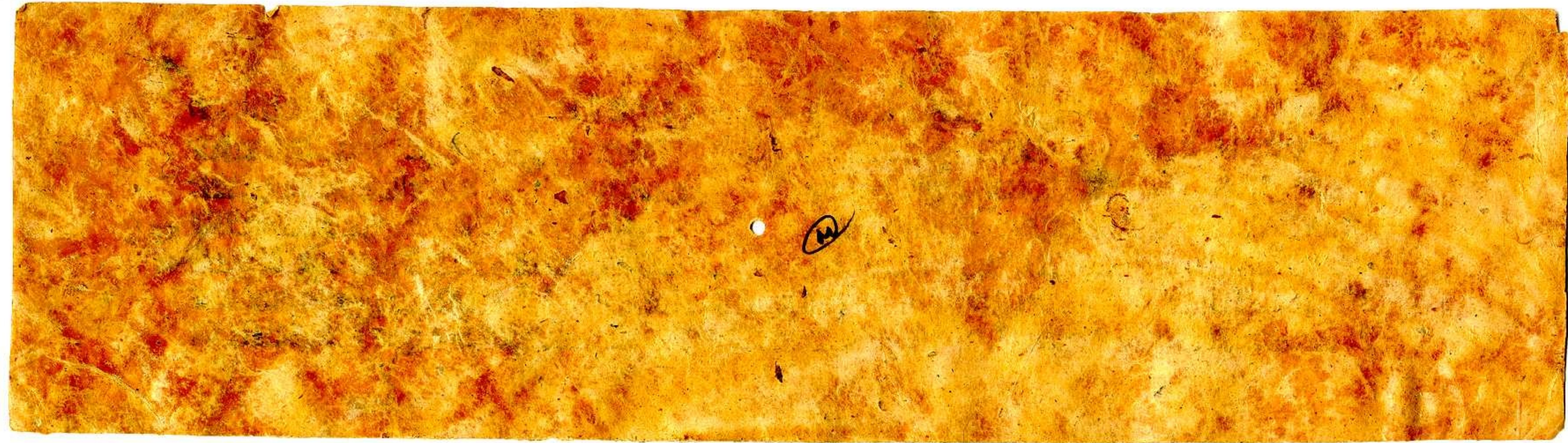




ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ अथ दीपयागस्य विधिः ॥ अथो दिनकृत्यविधिः ॥ दधुवियायनवकाव यजमाननयूष्या
 कन्यागिनी आदिनविधिः ॥ गुवृणामनुवाक्ययुक्त ॥ आमन्त्रितासिध्यागिन्या संगणं गुवृयूवर्कं यूष्यद्वर्वा
 कन्येव सोमनस्यं प्रयच्छमे ॥ अथ भगवद्गीता
 १३ कृष्णयजमाननवियक आमन्त्रणस्नान ॥ ॥
 यन्मनःगथा वालमासीनथाथाल समरागमनि
 उवाच कथय मया वदिसु न निश्चायेथगा ॥ गतादवाय यजमाननयूष्यराजनं कावथन ॥ दधुवृण सा
 आयागकमन्त्रिण स्वादयायमाल ॥ वलि ॥ जाय स्मरु नय्येण ॥ श्रीनिधुनयादि ॥ अथ न ॥ अथ विनिगयादि

॥ अतिनागयादि ॥ नकानक ॥ अथ यूर्व ॥ गणथादया गुवृमनुलर्गं स्नानदवमककाय ॥ वलिविमर्कलयाय ॥
 सकलद वलिनाहमवाय गणथादयादग्यं ॥ उरुवयाशका दुधिकादाम ॥ मर्कगिथं दानयुजा ॥ उरुवयगु
 नियाय वाहन ॥ यणुकागयाय ॥ यमाद सम
 यन्मनादि आणीव्याद ॥ ॥ अथो दिनकृत्य
 य ॥ निवविमर्कने ॥ आयाययुजा ॥ दधिल ॥ यजमान
 य ॥ ॥

१. अथ द्वितीयः दीययागविधिः ॥ तस्य अगमस्य प्रथमः ॥ उद्धावलिखितं चकं, चकसावर्तुवृत्तिं । मध्य
 गिकाण्यध्वानं, वायुपृष्ठं द्विषाणं ॥ वायुयणवचकं च, वनीसीनूनवायक ॥ वायुयवलिदणकं, अमिताभकृत्तुका
 दिय । हून्त्यादिदणमश्चैव वलिदयादियकण ॥ १ ॥ उद्धावकमाहुया दीययागस्यमणुर्ल ॥ ॥ वायविधिः ॥
 गिकाण दान महायाग ॥ यागजवलास अणुज ॥ यागयवलास अर्द्धयाक ॥ यागद्वयन कश्चला ॥ अर्द्धाण
 सर्वकस कयन ॥ थाकलिम रुयन ॥ र्यकलिमज
 काल ॥ धनयि, सुयनयागजगृयनीनिथानिदलि २ ॥ धनयानिखाल १० ॥ हून्त्यादि १० ॥ रुत्तुकादि १० ॥ वृक्षाण्यदि ८ ॥
 अमिताभदि ८ ॥ यागद्वयन दीयथातन ॥ मणुलखवलास यश्चवलि ॥ मणुलजवलास कंरु ॥ कम्पयाद्वयन समया

नक॥ धर्मशास्त्रसमयविधि॥ ॥ मूलनलसमयविधि॥ निवर्णाकिकमुया वक्राणाम् ॥ यश्च वलियार्थं ध
 वयादकाथा ॥ धानिज्वादिन सगलर्म वाकाटयत्रयनिधाय ॥ सगलर्मखस यलि ॥ जवस समय धास्यं ॥ ध
 नवासयविधिः॥ ॥ अथगुवनमस्कावादि दवाचर्णं ॥ ॥ अथयवसाधनं ॥ न्यासः॥ नैकांकी
 २॥ दूँनमः॥ यवूर्ता ॥ न्यासवय ॥ अग्निस्वायेन ॥ नै
 वाकदगव दूद धन साखन धनस कथ ॥ ॥ कांजीकुं नमः॥ धमकुलकुथ ॥ सालिकठनवय
 (आवाहनादि॥ धनमूर्द्धादिनयन ॥ कांजीकुं नमः॥ वाल कानक धमकुल ॥ यवविधिरुका (थयाकयाय ॥ धनव
 नूसाधनविधिः॥ ॥ यादयकालडाधमि॥ वहा धियंनु उनील ग्रीखणु वाल जानामस धालमास॥

धर्मसमरागयाद काकलीखवा कठालसम ॥ यवकिथाय ॥ मृयार्थयाय ॥ कलिकलखकनयादि ॥ धानिज्वादिन स
 गलर्व (यायस्यं यजमानन ॥ ॥ दीयकायाय ॥ धाल अर्धयागुन ॥ न्यासयाय ॥ धालस र्यंकायुनन साखनडा
 यमि ॥ नला जीविरुल लवक रुवठ धरुवठ
 दूद कसि अर्धग नवदवा ॥ धर्मकाका व
 नयश्चयव गियव कयुव धर्मकादयिगाठ
 य द(धामवजा कावयिवा धाधवाय ॥ यवूदकाठ धालास गिकाणवायावर्थंरु ॥ कालायागा डाधमि ॥ हाम्नायुन
 मयय यियलि सध धमनयावालन ॥ महायागलयय कयुव ग्रीखणु कूलवैकम कसूवि सूवा वकयन्यन

४
॥

गङ्गादकनयूल ॥ लयय ॥ कृयव रुयव जलयव अणुज अर्द्धयाक कश्च दधनयववयथनन ॥ यवूदका
 कथव २ थयसन ॥ कूरुथंन गुवूयं जाकावदवसास्यथान आनिम्यं कासवनिनयाव अलिम्यं युलुयाकथ
 न ॥ गुवूयं यथ ॥ वलुनिययादि ॥ वन्दसुया दय कमुठनयर्थन ॥ थव २ थयसन ॥ सवययाय
 ॥ आग्री आदिन गुवूयं यथ सगलवृविम्यं ह ॥ नंजकीवावुवसमूहं काङ्कणयत्यकानिर्गं स
 रुजानन्दसनाहं निमिर्गयवमामृगं ॥ वलुना श्रवसध्वया भकीकवणमूरुमं कलसागनसिध्वर्थ
 अनयाययमृगं ॥ लयययवमाविद्या सवययवमाकला सवययवमानकि गृहीतकीलिकीसूया ॥ यवूदका
 वृ नायाकाकाव सूया विम्यं ॥ यवूराजनयावक ॥ सगलम्यं यवूराजनयाय ॥ ॥ गणयुजायाकह ॥ सु
 २

द्वीवीवरुमया ॥ २

याद्यि ॥ यश्चिम न्यामयाय ॥ कलयारु अर्द्धयाग आत्मयुजा ॥ रुगणुद्धि ॥ आधवणकथनमयादि ॥ सिंहास
 नायनम ॥ यश्चयतासनायनम ॥ स्वाहावद्रियता सनायनम ॥ लवासायनम ॥ ध्यान ॥ वन्दन ॥ नंविनयनयादुका
 ॥ श्रीखण्डनयुक्तं गन्धार्थसुमनाहर्नं ॥ आ रुषिर्गललाटाख्यं वन्दनयनिगृह्यगं ॥ सिंदूर ॥ वीथ
 श्रीमहावीर वीवरुमविशुषिर्गं ॥ विलाया कर्षणीयवि सिंदूरयनिगृह्यगं ॥ भारुनि ॥ श्रीभारु
 नीयादुका ॥ भारुनकामसंसिद्धं सुमायाक कलसुथा ॥ अर्द्धलवदुसोगार्थं भारुनदृष्टिदाय
 कं ॥ यश्चायवीन ॥ अर्द्धयश्चायवीन ॥ यश्चायवीनयवमयविर्गं युजायनज ॥ सहुर्गयवमान ॥ आयुष्यमययनिमं
 वणुर्गयश्चायवी नयनिगृह्यगं ॥ यवू ॥ अर्द्धनानायुगलकालयवूया ॥ नानायवूयसुगन्धनि मालयाकसुमा

दयं। मोहा। असिद्धिदरुय युष्माकाहलमुरुमं॥ वसु॥ नानावसुविचिगलि सिद्धवावुल। लारिगा। दवा। अरुधि
 नी। अरु। सुवर्लिकाल। लारिगं॥ युजन॥ नै। नै। वदककुनिधुं। लाकाकविलि। को। कामा। अदावलि। की। मी। महा। कोर
 काविलि। नै। सो। स॥ ४। प्रीयादुकां॥ नै। नै। नमारुगवनि। अरु। ककुिकाये। कां। की। दू। धा। य। अ। धा। य। अ। धा। य। मू। खि। कां। की।
 ७॥ किलि॥ शविश्रयादुकां॥ नै। नै। नमारुगवनि। अरु। ककुिकाये। कां। की। दू। धा। य। अ। धा। य। मू। खि। कां। की।
 विश्रयादुकां॥ अरु। गवनि। सिद्ध। दु। मू। की। क। वि। ककुिकाये। कां। की। दू। धा। य। अ। धा। य। मू। खि। कां। की।
 नै। नै। मू। प्री। नानन्द। न। कि। के। व। नै। नै। प्री। महा। वि। श। वा। अ। न्वरी। मू। या। दू। कां॥ अ। य। था। निनी। य॥ ४। यादुकां॥ अ। य। था। निनी। य॥ ४। यादुकां॥ अ। य। था। निनी। य॥ ४। यादुकां॥
 ॥ य॥ अ। य। था। निनी। य॥ ४। यादुकां॥ अ। य। था। निनी। य॥ ४। यादुकां॥ अ। य। था। निनी। य॥ ४। यादुकां॥ अ। य। था। निनी। य॥ ४। यादुकां॥ अ। य। था। निनी। य॥ ४। यादुकां॥

आ। गर्व। कूल। संधारुजा। थकविशानिनीनां। अयरी। रुयरी। लभयरी। एकाकरी। धाकरी। ययय। अरुनवाकरी
 ली। रि। अ। म। मिनीनां। वलि। गुरु॥ २। म। म। सिद्धि। कुरु। नु। दू। अरु। दू। स्वाहा॥ अरु। नया। अरु। यलान। मययवतान। द्वाकाव
 ययय॥ नै। ययय। गुरु। नवीय। सिद्धानाम। नै। मादि। नै। निस्कलं। सकलात्यनं। कमल। मू। नै। मायदं॥ द्वाय
 ॥ मू। द्वा॥ गुरु। वी। वरु। मं। धर्म। सिद्धानाम। नै। मादि। नै। वदक। रि। यया। लु। लं। एका। कालं। नै। मायदं॥ स्वाग
 नै। धर्म। वा। जानां। मलवा। गवि। वकु। नि। धा। द्वा। द्वा। विनिमूकि। न। लं। की। नै। मी। लं। वया॥ अरु। मू। या। अरु। द्वाय॥
 वलि। वि। य॥ वलि। गुरु। महावीय। ययय। नै। ययय। साधनं। मादं। रुयय। सल्वानां। निमलं। सु। टिकायमं॥ अरु। नै। महा
 वसी। दिवां। सर्वरु। न। सदादिनं। सकलं। निस्कलं। रु। नं। ययय। यं। नै। मायदं॥ अं। स। म। स। म। लु। यी॥ ०। सिद्धा। सन। यी। वि।

१२॥

यममूला सावकासावविष्णुं गुरुगणनमिगुरुवरीकृष्णयाला सानकानकनृयाविविधगुणयथागि
 नीलनिमामि ॥ स्यामोवक शोदि ॥ अस्मत्तयप्रिमश्च शानश्च मरुमाया श्रीकृष्णिकादयो श्रीसिद्धिलक्ष्मी
 दयो यविगुवाकलकमणि अद्वैतादिदी येयागश्चलानिमित्तयेन अगुगन्धादि ॥ एतक
 यथाप्रदादक्रिणी शुभमरुं संयुदय ॥ नि द्विष्टिययां नु सर्वेण अमु ॥ नित्यानि युजा ॥ ॥
 कृष्णवदक गण गुरुमल्ल श्रीकण्ठना थकर्म सिद्धिलक्ष्मी यानिसयाकाविधिनेयाय
 ॥ मूलमनुथय २ मन ॥ जाय भाग थव २ ॥ यश्च वलियुजा ॥ अस्मत् युजन वलि जाय भाग ॥ नीत्यायु
 र्यादि ॥ थवसक यानिसयाकायाय ॥ अस्मत् युजन जयभाग थव २ स ॥ ॥ निखायुजा ॥ अस्मत्तयक

थयादि ॥ वृषास्त्रायनम ४ ॥ यश्च यगस्त्रायनम ४ ॥ यन्त्रनादि युद्धवग ॥ युजन ॥ अस्मत्तय ॥ अहं ए अस्मत्तयनाकि
 रुववानन्दवीवाधियगथमं रयादकां ॥ अं अं अं निखायकन्दरुववाययादकां ॥ शिख २ ॥ यश्च ॥ वलि ॥ या
 गुदियुद्धवग ॥ दक्षिण ॥ सिन्दवयन्त्र न विलयादि ॥ मुनि ॥ शुद्ध ४ ॥ नं गुणुयं सुटिकम
 निमयं रुगकेयुवकानि यश्च स्ययश्च व शुभवनिदण्डुजां नृलनस्त्रामुकश्च ॥ हारं दिवागि
 रुषं गिनमननं यनं सय्ययष्टायवीगं थ वस्वकन्दमृत्ति सकलरुयद्वं नोमिनार्थनिश्वर्ण
 ॥ या ॥ अस्मत्तयकयालमूलाकलकवका ॥ अस्मत्तयवयु ४ ॥ सव्री ॥ अस्मत्तयवयु ४ ॥ अस्मत्तयवयु ४ ॥ अस्मत्तयवयु ४ ॥
 द्वीजनिययसादसमथरुथायिसंरुगय ४ ॥ याय ४ ॥ अस्मत्तयवयु ४ ॥ अस्मत्तयवयु ४ ॥ अस्मत्तयवयु ४ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ गणेश स्वस्व नित्य द्वा चर्च ॥ सूर्याद्य ॥ सुबुनम स्कार कृत्वा ॥ न्यास ॥ जलयाग
 अर्घ्याग यजुः ॥ गुरुपुत्रि अलमयुगा ॥ गणामालि य ० ॥ यश्चर्चति दद्यात् ॥ अर्घ्याग जलन विन्दुगयं
 मुखलाधनं ॥ आवाहन श्रीमद्वर्क ॥ विद्वत्
 यजुः ॥ आधायन कीर्त्यादि ॥ वृथा स्नाय
 वाङ्मन आवाहनं ॥ मूलन शुभलि २ ॥ गङ्गा
 मूला कलक मुरुदा वि काय अलि मुरु
 धावाङ्मन वलि १ ॥ आवाहनादि ॥ धन मूर्धा दनय ॥ जाय मुनि १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

स्वस्व नित्य कर्म ॥ द्वा चर्च यन्त्रिमथ गुलिखा द्याथ ॥ धृय दीय नेत्रय जाय मुनि १ ॥ गङ्गा ॥ सुबुनम
 गणस्य आनिमक अष्टाकाय ॥ अष्टामय निमलन किर्कसं यथा धिथवा नव वला विदं ॥ आवाधिर्गनय
 कवागुनिर्क कवागिन्मर्क रगवान् कऊन ॥ ॥ अष्टायसा दगुबुल गलथा गयर्क ॥ अष्टाय
 सादगुबुल गलमिद्विलक्षी १ ॥ अष्टायसा द
 वसवमिद्वि १ ॥ अष्टायसा दविमलं खलुन
 न्ग्रीववजागनिर्क कवागुन्मर्क रगवान् कऊन ॥ अष्टायसा द २ ॥ सगले १ ॥ अष्टाय २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
 गणसुबुल यवयुजायागवन ॥ रुबुल दनेरिथ ॥ हाउ अरुवलागिथ ॥ अष्टवाल युनिकानकीखाथ ॥

आवमनं कृत्वा ॥ सूर्यार्घ्यं ॥ तु नमस्कावादि आत्मयुक्तान् ॥ आवाहनादि यश्च वलिं दद्यात् ॥ मयूवासा
 यथादुर्का ॥ नैऋतीं दीकलयुगवदुक्ता यथादुर्का युज्यामि ॥ नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 नैऋताला मुख ॥ अवनव २ न अहिरुगवन मनुजम ॥ अथ यानीनं वलिं दृष्ट्वा २ वाक्त्रिंशत्
 ददस्व मद्रुं २ रुद्रस्वाहा ॥ वदुक्ता वलि ४ ॥ नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 कायश्च गुणालायेयादुर्का युज्यामि ॥ नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 तुलम ॥ अवनव २ यदुर्का युज्यामि ॥ नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 काटि समप्रशय ॥ अहिरुगवन २ वदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण

रुद्रस्वाहा ॥ अवनवलि ४ ॥ नवास्त्रायथादुर्का ॥ नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 यी० ॥ अवनवलि ४ ॥ नवास्त्रायथादुर्का ॥ नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 काटि समप्रशय ॥ अहिरुगवन २ वदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 रुद्रस्वाहा ॥ अवनवलि ४ ॥ नवास्त्रायथादुर्का ॥ नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 द्वियामुपुयथादुर्का युज्यामि ॥ नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण
 नैऋतवीर्युगवदुक्ता थकयितुं उदोरात्रगुण

[illegible]

नीकलाथे १॥ गं दालिनीकलाथे १॥ घं विष्णु लिङ्गिनीकलाथे १॥ सं सूप्रीकलाथे १॥ हं स्वयं कलाथे १॥ लं कथिला
कलाथे १॥ कं रुद्रा कलाथे १॥ १०॥ हं ग्यास्तं यागधायम ॥ ॥ गुर्वृण्णु ॥ यद्यकाल्य ॥ यागव
७४ समयनन्दननलया ॥ अथाय वडा मनन
श्वन ॥ वकाय विष्णुयथन ॥ नं रुं सूर्यमनु
खं वं नायिनीकलाथे १॥ गं रुं धृमाकलाथे १॥
वृथिकलाथे १॥ कं दं सूर्यमाकलाथे १॥ कं थं रागदाकलाथे १॥ कं नं विष्णु कलाथे १॥ अं लं वायिनीकलाथे १॥
हं रुं क्षयणीकलाथे १॥ ०७॥ कं माकलाथे १॥ य ७४ संस्कार ॥ ७४ नमो रुगवति ॥ कृद्विकार्यया ॥ निवीकला ॥

११ ॥ अशुभ साधुर्ल॥ कवच नावगुणं ॥ युनः अशुभ नावगुणं ॥ ॥ इत्यनिर्णय ॥ यन्मूकवृत्तिवाचान् सगन्ध
 स्वायमादिर्गं । गंद्वयवर्मद्वि विद्विसिद्धियदायकं ॥ गगा अलिनायुवयत्यारु ॥ वक्तापुखपुर्मरुतं अ
 लयत्रससंरुव । आयुविर्गमहायार्गं यीयु ॥ यवसमावह ॥ नैजहले यागयुवय २ सले यागय
 विर्गकवृ २ स्वाहा ॥ अथावाशुल गिकृठमू ॥ दया लाययन ॥ नैजकांकां दुं २ यम २ धाव
 २ गवतनूययट २ ययट २ कट २ वम २ द ॥ म २ यागय २ विद्वि २ दू २ रुटकां श्री महा कामावि
 काविश्रयादुकां ॥ ननमलुगणिकां सामानिख रुस्यमक्षु रुकावसकारं विरावयन ॥ सभासमपुलायधाग
 लकलात्मननमः ॥ अं अमृताकलाये २ ॥ अं मानदाकलाये २ ॥ अं यूयाकलाये २ ॥ अं रुष्टिकलाये २ ॥ अं युष्टि

कलाये २ ॥ अं वनिकलाये २ ॥ अं धृगिकलाये २ ॥ अं गणिनीकलाये २ ॥ अं यदिकाकलाये २ ॥ अं कानिकलाये २ ॥ अं आ
 लाकलाये २ ॥ अं वीकलाये २ ॥ अं धीगिकलाये २ ॥ अं अमृताकलाये २ ॥ अं यूयाकलाये २ ॥ अं अमृताकलाये २ ॥
 १३ ॥ विमव अमृतायुविश्वार्थ सूवपुदियश्चर ॥ त्रीनिधाय ॥ नैजलूं मूं मूं नूं यश्च वनवाययादुकां
 ॥ अकत्रायमायनं ॥ यागनिर्मलं ध्यायन ॥ गगाधूं ॥ न॥ लाकावसनिराधवी अयागठिमवागिनी ॥ योव
 नाननवृयाशी गिनयादिवयुयिनी ॥ मंदिवातंद ॥ यगन्या दणष्टागुजभाविणी ॥ खद्र गिगूलवडाश्च
 तिष्ठिर्ममृजलंगथा ॥ गदायद्रववंदत्वा यागसद्यविवाजिर्ग ॥ रुटकां कणयपुश्च खद्रावधकमूर्ज ॥ नीलाय
 लारुयविन्दू वामरुक्षुधुभाविणी ॥ दिव्यवत्तकृतायां रुमारुवण रुयिनी ॥ अं गयद्रामनायवी वद्वयद्रामना

[illegible][illegible]

येयादुर्का ॥ १॥ अणुअणयस्ययुय ॥ अणुवाहनादि धालिमूर्धादयनयन ॥ आय ॥ ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ काण ॥ नैजकायं
 विद्वालियुयुयवममृगमयं वकसिंदुववर्णु वक्तागुयवु रुगावहेनिअदि निम्नगुयनायायदया ॥ मासु
 १२ सुष्टिबुयासकलसुवगण ॥ अणयनीसद वी मोरायदिवानेतामरिमगरुलदाभाकलक्षीय
 दागा ॥ अणगन्धादि ॥ ॥ नमिमहायाणयुजा ॥ ॥ गगश्वयवयुजन ॥ विपुष्टियुवकाणानु श्व
 ववसुवधवर्ण ॥ धूमवर्णमहागर्ग वकस गुलयुजन ॥ युगसुश्वयवयव वि चटकादिगुश्वय
 र ॥ श्वयव अयमूक ॥ श्वयजननविद्यन ॥ नैजविपुष्टियवकासनाययादुर्का ॥ नैज यमा महासिद्धिस्वयवय
 दुर्का ॥ आन ॥ नीलं गुगननैयव यगुवद्विगिलायन ॥ विपुलजायमालांश्च विष्णुमिणययुविर्ग ॥ वृ

यमकन्यसमानुष्ट विपुष्टियवसिद्धिर्ग ॥ आनयस्वयवयव लक्ष्मीमोरायदायक ॥ युववत्सनुण पाशुलि ॥
 नैजकायं महाकायिकायकां लूकलाप्रिसासीसु म्मा विपुष्टि नाकिनियकनीयुवीश्वप्रीणनदयवयादुर्का ॥ यल
 दीयात्ममूर्धन ॥ अणियमर्गसुणारिर्ग ॥ अणुवि विपुष्टि नानवदीय कलुलीननमाश्चुन ॥ वलि ॥ नैजवागीश्वरी
 नूवत्तगगललाकरागगकुगमिनीगगललाक अमृगसंयाविणीगगलननदयवगगललायवगुश्वसि
 लेककाठिसिद्धियगुश्वसिलककाठिधगिनीय दूकावलिगृक्षस्वाहा ॥ अणुवाहनादि ॥ दासवसंकार
 नीमूडा ॥ मुनि ॥ श्वयवसिद्धिदरुद यविगियायनाणन ॥ राग्यलक्ष्मीसदागस्य निवयुयनमाश्चुन ॥ अणुगन्धादि
 ॥ १ ॥ ॥ गगश्वयवयुजन ॥ अणुवाहनादि ॥ अणुववदयवर्ण ॥ वकवर्णमहागर्ग सुयमगुलयुज

७४ न॥ वावाहृचवर्मसर्गं ज्ञानाश्वेनकथया। रुचवर्मप्रायमुक्तं नरुचवर्मविदुः॥ ७॥ ज्ञानाहं नृपथीयकया
 दूकां॥ नृजन्मां महाचयवाययादूकां॥ आन॥ यीनवर्णुनिरुद्धं चतुर्विदूकयाम्बुजं। चतुर्विदूकयाम्बुजं
 गुरुमधुना धूम्रं॥ उक्तयष्टायवीनश्च य उष्टयवायणी। यद्वहंससिनिर्गन्तव्यं वद्वयुयं
 आयन॥ युष्टवत्तमकुण्ठश्रुति॥ नृजघायुः धावज्जघायामुखीवद्वयुयं धूम्रं मनुषिकांकां
 कृष्णं ज्ञानाहं काकिनीगुणयुवीविश्वानंदं यवयादूकां॥ निर्याणखवमश्च मू ककुदीमान
 न्यधुं संयुगं। कालीमनुगनीलीनं ककुलीननमाश्चुन॥ वलि॥ नृजमायायैस्तु वलस्वर्गलाकशागगद्वं
 मिनीस्वर्गलाकज्जुगसंयाविणी स्वर्गनन्दयव स्वर्गस्वा वगीमलककाटि सिद्धयगीमलककाटिथानि

नीयादूकां॥ दौडावनीमूर्धा॥ मुनि॥ रुचवर्मचुवनं सर्वं यदिगुंथरुणाधनं। मुष्टिसंयददालक्री चद्वयुयंनर्म
 मुन॥ ज्ञानंआदि॥ २॥ ॥ ज्ञथजलचययुजनं॥ मलियुवकवायया जलचयविष्टुदेवर्गं॥ आमवर्णमहा
 र्जं यद्वमलुलयुजनं॥ मलियुवकयकासना ययादूकां॥ नृजकां महाजलचयवाययादूकां॥ आन॥ क
 (कुन्दहिमसंकासं मीनवकुश्रणीधवशाश्रुति हसमणीचर्कं धूम्रं मकवासनसंस्तिर्गं॥ मलियुवक
 यकस्तु लंखयागुधुनासुधा। आयकुलचवर्नं यवद्विगायसुखाग्रियं॥ युष्टवत्तमकुण्ठश्रुति॥
 नृजकांकां चव्ववनिश्चद्वं वलुपिलीलीलुमां मलियुवकलाकिनी महायुवीपणीणा नन्दयवयादूकां॥
 मुनि॥ वकमलुलसंयुष्टं वकककुयनिष्टिर्गं धूम्रं वकिकाहुनयागार्थं ककुलीननमाश्चुन॥ वलि॥ नृजहानं

ये मुं बलमयला कलागगर्गमिनी ज्योतिषकप्रमृगसंवाविनी मर्यानन्दयवमर्याम्या ज्योतिषकाटिसिद्धि ज्योति
लक्ष्मीकाटिथामिनी यादृकां दर्लि गृह २ खाहा ॥ आवाहनादि ॥ ब्रह्मसर्वाकषणीमूर्धा ॥ सुनि ॥ समुदाहृतं जानं यवि
विद्यायनागर्ग ॥ सिद्धिभोगागर्ग रुद्र विष्णु
॥ स्वाधिसूतान् प्रह्लादभक्त शरवर्षवृक्षयवर्ग ॥ योनि
रुमाहृतमिभनय ॥ शरवर्षप्रथमक प्र यव
मा मदाभयवायनम ॥ आन ॥ वक्रवर्णमहागर्ग ॥ गालिकुं गिलायनं ॥ खड्गखट्वा मरुतक प्र मकायागमृगाल
यु र्य ॥ मलियूवकयकर्म कल्यवृक्षाग्निगमर्ग ॥ सर्वशरवर्षवृक्ष प्र नक्षत्राग्रगर्ग ॥ यववृक्षनक्षत्र गार्ग

लिं॥ नं० मुं कृदिकार्य कलदीयाय दीनं यदा प्रियां वीरं मुं स्वाप्रिस्मानला कि नो धीयूरी भूतगरी मानन्दधवयादकां
॥ डाजायु कादिडायक मायकमययूजयन॥ गतिधकृद्वि द्विनिष्कान्ता कलुलीन नमाश्मुन॥ वलि॥ नं० दीं गायरीनं
नलनागलाकशागगवृन्ममिनी नागलाकभूमि
ठिमिद्विधवत्वाविलकृकोठियागिनीयादकां वलिं
मुनि॥ सखर्वसर्ववीयालि वलवीयाविवर्द्धनं
धादि॥ ॥ सर्वयवूयूजनं॥ आधवमनिकाणानु सर्वयवू सर्वधेवर्गं। सर्ववर्णमहागजं स्वगमलुल
यूजनं॥ सखाउयवूसर्वालि श्रीवान्तुयिनामलि। लकृवाद्युगदृशानि यूषुश्रुदप्रिसंयुनं॥ सर्वगयावर्न

[illegible]

नक्तलक्षकादिथानिष्ठयादृकावर्तिगृह २ स्वाहा ॥ अवाहनादि ॥ सै ४ सध्वानादिनीमूढा ॥ मुनि ॥ सध्वयवृथावनं
युष्मं यद्विनिष्ठरुण्मधनं ॥ इच्छागकिं क्रियासध्वं निववृयं नमाश्चुन ॥ अग्न्यादि ॥ ७ ॥ ॥ गभाअनन्य
यूयुजनं ॥ अग्न्यावावृणिकाणेषु गिलाअनन्य
गक्रिवागिलिमीमिप्र सध्वानन्यनकाविणी ॥ का
सेधर्वथाकं कालियुगुमवासनी ॥ अग्न्यावकास
नीलाअननिरांधरां चतुर्धादं गिलायनी ॥ रवप्ररुठकधर्वांधरां यूयुयागकवद्वयं ॥ अलिमंसलगा
निर्यं विन्धर्मसावगाविणी ॥ कालयकमिगांधरीं कालीं कालविनागिनीं ॥ नै ७ श्रुं कं कालिकाथयै

यादूकां॥ न नगशुलि॥ नेंकालि शिविष्टका कृष्णये क४ न नवायि हों हों दूँ दूँ॥ जगह किनीयुयुवित्री
जगह लीन नन्दयवनाथ यादूकां॥ नेंकालि कालि महाकां ली मांमं गानि नें॥ जगनि दों दों दूँ वकव
कृष्णखीयवी मांमांयन्धुन गव४ ग्रीहदय दूनीयादूकां॥ यद्यविं गति संयुक्तं जगनि मृग्य
वदुदिनं जगह विं गति सन्धर्व कलुलीन न मां मुन॥ वलि॥ नेंकालि नीच वल यवन लोक
जगह गदुगमिनीयवनलोका जगह सयावि लीयवनानन्दयवनाथ यादूकां॥ जगल दकोटि
सिद्धि जगल दकोटि यागिनी यादूकां वलिं गृह २ म्हाहा॥ जगह नादि॥ कां सर्व महा दूष्ण मृदा॥ मु
नि॥ नमस्क कालिकायवी सुखनि दानायिका॥ व्याधिं जगह रुयं धारं कालमृग्य रुयाय हों॥ जगह यग्य

सहा३

मुनि ॥ गुणलि ॥ नै ॥ काली ली ली ली ली ॥ क्रिया न प्रो यादु का ॥ नमो दा व नि रि स न ॥ अष्ट रु व व स नि र्ग ॥ अष्ट रु क रु रु रु
 न क लु ली न न मा ॥ मुनि ॥ यु व व ॥ नम रु ल व लि ॥ अष्ट रु ना दि ॥ श्रु ॥ श्रु व वि मु डा ॥ मुनि ॥ अष्ट रु क मा म ली द वी स र्व
 गुण म का वि ली ॥ वा ग मा का नि सा या ॥ नि स र्व या ॥ य य न स र्ग ॥ अष्ट रु ग ॥ ॥ नमो अष्ट रु या क यु ज
 ७८ ॥ नै ॥ नि व अ न क म ला स ना य वा म ॥ अष्ट रु या दु का ॥ नै ॥ वां वी वृ मां वां वा ज मा न की द वी या दु का ॥ अ न ॥
 सृ य का टि य नी का मां यु ग रु मां नि ला य नी ॥ वि न्द ॥ या न मृ ना य ॥ अष्ट रु ड ल्य ला व व दा रु या ॥ ना ना ली का व
 रु या अ ॥ अष्ट रु का म सु सि दि दा ॥ वां वा ज मा न की द वी वि न्द ॥ कि न मा ॥ मुनि ॥ अष्ट रु लि ॥ नै ॥ वां वी वृ मां अ न न प्रो य
 दू का ॥ अष्ट रु म ॥ काले य रु ली ॥ अष्ट रु क अ म स नि र्ग ॥ म नु सि दि स मा र्वा न ॥ क लु ली न न मा ॥ मुनि ॥ यु व व न

नु ल व लि ॥ अष्ट रु ना दि ॥ अष्ट रु वी ज मू डा ॥ मुनि ॥ अष्ट रु ग ॥ वा ज सी द वी ॥ अष्ट रु का म सु सि दि दा ॥ स र्व न्म नि क
 व नि र्ग ॥ स र्व सी रा य दा य क ॥ अष्ट रु ग ॥ ॥ नमो अष्ट रु यु ज न ॥ नै ॥ नि व अ न क म ला या य ॥ अष्ट रु या द
 कां ॥ नै ॥ वां वी वृ मां वां वा म सी द वी या दु का ॥ अ न ॥ काला नि य स म य का द न व का रु जा द न्म ॥
 का य वि द्वा लि य ॥ अष्ट रु नि या वि जा ना व वा रु य ॥ स र्व न्म ग ॥ अष्ट रु ना या स र्व स म्म दि दा य का ॥ या मा
 नां मा म सी द वी ॥ अष्ट रु कि न मा ॥ मुनि ॥ अष्ट रु लि ॥ नै ॥ वां वी वृ मां अष्ट रु ना य दू कां ॥ य रु यी
 ० नु रु रु रु न ॥ अष्ट रु जाल ध यु लु लु ॥ का म रु रु रु रु न यी ० ॥ क लु ली न न मा ॥ मुनि ॥ यु व व ॥ य न म रु ल व लि ॥ अष्ट रु ना
 दि ॥ नै ॥ वां वी वृ मां वां वा म सी द वी स र्व सी य दि दा य का ॥ स र्व न्म नि क र्ग ॥ नि र्ग ॥ ल क्मी सी य द दा य कां ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

लाङ्केश्वरवाय॥ नैऋत्यं वलं ववाययी भविकाव कयालीनरु ववाय॥ नैऋत्यं सैरुं डरु वयी भविकाव एक
 योदरु ववाय॥ नैऋत्यं वृन्ना नयी भविकाव शीमवृयै ववाय॥ नैऋत्यं वृन्ना नयी भविकाव हाठकरु ववाय
 ॥ नैऋत्यं डुं डुं वयी भविकाव द्वां गगलरु ववाय वलिं गृह २ स्वाहा ॥ वृन्निदु युका दिवलि ४ ॥
 गगादीययुगा ॥ वृन्ना ववाय कथय्यादि ॥ वृन्ना
 वृन्ना कला नयया दूकां ॥ ॥ गगादीययुगा
 स्वस्ति वायुय ० न ॥ स्वस्ति कया त्मदा विधि स्वस्ति मारुतु मवये यानि क नी स्वस्ति सवन्धि स्वस्ति थयो वि
 थवना ॥ नारिकुल्ले संरुतं नाकि दीय मना रुवं यका सय वर्मनं रुं रुं न विदु न संरुथन ॥ रुं रुं रुं

लिहकाश्च स्वस्मिः कलानिधयना । वन्दिताय वनासध्वं आनिदुर्यनमाः सुत ॥ रामयस्मिन् यदीयं दलनीयाय
 नागर्न । दहनि सर्वयायानि सयुक्तमकृताय हं ॥ अत्रादिकमृगदीयं सर्वगुणमिवाय हं । सर्वदीयावलाकं
 यविर्गुणदहनाय न ॥ यद्यदीयादिनिःशान्तं सु
 द्रवुमज्जलं ॥ दीयदर्शनमाकुलं सदा मानन्दकं
 सर्वगुणिकमायवी विद्यानं प्रायमायनी । मुक्ति
 य ॥ अत्र ॥ कनकायकायमुक्तायि यः यदगतागुणितं वाणिमाणा अत्रावत्वा विदुस्मा मरुमरुलदाणाकि
 नूतनप्रदायो । जिह्वा सकललनं जूलिये निगता रुद्रायुष्मद्युतन विष्णुसंसाववायी जयतु यत्र सदा भवमा

[illegible]

१२५
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यजमानादिसर्वेषां सयुग्यगुवाच ॥ सूयगिष्ठाववदारुवन्तु ॥ अक्षु
ण्विमर्कुर्लं ॥ ॥ नमो दीययुमनं ॥ उमययगुवाच ॥ श्रीसंवत्सरे सुगुण सध्वनिमस्कारं कृत्वा ॥ अथमकाली
युग्यययान ॥ युनः दीयं निष्प्राय ॥ दीययुग
नं ॥ अक्षुण्विमर्कुर्लं ॥ सध्वनिमस्कारं कृत्वा ॥ अथमकाली
युग्यययान ॥ युनः दीयं निष्प्राय ॥ दीययुग
नं ॥ अक्षुण्विमर्कुर्लं ॥ सध्वनिमस्कारं कृत्वा ॥ अथमकाली
युग्यययान ॥ युनः दीयं निष्प्राय ॥ दीययुग
नं ॥ अक्षुण्विमर्कुर्लं ॥ सध्वनिमस्कारं कृत्वा ॥ अथमकाली

व२
 दीकनशाकवां ककुशरुं नमाश्चुन ॥ ॥ जलयव ॥ नैजमल्लामांसमहामांसं रुकावांजनकीयवू । यद्यु
 कावर्नदिव्यं ककुशरुं नमाश्चुन ॥ ॥ लखव ॥ नैजगुणविदुनदं गुद्वं चक्षुसमयमच्चसं । नजा
 मीनियथलीनं ककुशरुं नमाश्चुन ॥ ॥ स ॥ वयवूयुजयन ॥ श्वयव, रुयव, जलयव, लखव,
 सर्वयवसतयाव वाल ॥ वामरुक्षनामिकां ॥ गुधन ॥ म(श्च) शिकाण, यद्राण, मलुल, जूष्टणं,
 यगुक्षाण, यगुद्राव ॥ म(श्च) सकावादिहका ॥ नानं शिकुठमूदया नवीलिखन ॥ तम(श्च) यूजय
 न ॥ यगुर्क यगुर्क यगुर्क, यगुर्क यगुर्क यगुर्क ॥ म(श्च) ॥ नैजनमारुगवनिधुं ककुकायै कों कों कुंधाय जूधा
 ये जूधा वामरुवी क्कं क्की किलिशविथयादकां ॥ नैजनमारुगवनिधुं ककुकायै सुं सुं सुं कण्ठनमज्जय

[illegible]

ॐ नमः ॥ ॥ शुभं नमः ॥ यिन्मथ नमः ॥ वाक् नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॥ निवाय नमः ॥ ॥
नाय नाय नमः ॥ गृह्याय नमः ॥ उल्काय नमः ॥ ॐ निवाय नमः ॥ ॥ लुं मुं दूं लूं नूं यवाण कथनमः ॥ ॐ नूं मुं का
त्याय धमयवाण किं मुं वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ शुभं
दूं २ सिद्धि मां गन्ध २ वीथ वीया दूकां ॥ शुभं २
द्विष्ट मुख्या वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ महा वलि न
य ॥ ॐ नूं दूं या दूकां ॥ शुभं ॥ धूम्रा रं दीय नं गलि न वृथि जटा गीलि नं कलालं रुद्र स्वप्न नु कर्ति न नयय
वधुर्गती दू गूलं कया ली । यका नं मत्स्या मां साण वव स वि वि वि भा दि ना थ न मं स्का मा नं श्री मं ह व स्व गणय

त्रिवृत्तानामिदं विदुष्वनार्थं ॥ नमस्तु यत्र सर्वं दत्तं सिद्धिमात्रं गच्छीत्यर्थः । सर्वत्र कावर्ण्येण आनन्दमूदिनी लया ॥ स
 वृत्तानि क्रिया सिद्धि र्वादिनाथं रुल्लयदा । सर्वसंयत्ति दालक्ष्मी संयदाय यथायथ ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ धीनिधना ॥
 एकानक ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥
 २० कलिकाशिक ॥ दुर्गाववायुर्वी ॥ यजमानन ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥
 लुल्लकावयनं दयस्या ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥
 निधाय ॥ यन्त्रेन सिद्धं यथायथ ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥
 जानुसुमोभृत् ॥ मुनिः ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥

अथ यथा समाचार्यः प्रायुष्ययणप्रियं । विद्वान् सर्वं दालक्ष्मी संगती निवसद्यथा ॥ नमस्तु सर्वं दत्तं वीरवृत्त्या
 वगात्रकं । वीरनीरुववीचकं सर्वद्वयवृत्त्या ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥
 मयकं रुद्रुलिनीयुजिनी ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥
 वमेश्वरी ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥
 अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥
 ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥
 नमस्तु सर्वद्वयवगा । सर्वविद्विहवद्वी सर्वान् क्रियावर्ष ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥ अङ्गुलीभ्रादि ॥

[illegible]

१ अथ धनं गजान्धनं रुद्रकं मृगमवय । रुद्रकं समादूता रुद्रकं जन्मदयान् ॥ एतान् गजान्धनं मृगमवय ॥
 २ मयकं युयुयं खण्डं लिष्टुमयं समलुक् । जलयवकं समादूता जलजं जन्मदयान् ॥ मयकं युयुयं खण्डं ॥
 ३ लघुन्यादिययायूकं यद्युल्लुविण्यनम् । लघुयवकं समादूता लघुयवकं जन्मदयान् ॥ वल्लुन ॥
 ४ कलिकं काकजन्मसिं गलराटिगिराणम् । कलियवकं समादूता कलियवकं जन्मदयान् ॥ वल्लुन ॥
 ५ मारुहायिरुहायव वल्लुहाण्यनवय । दीयकं समादूता दीयकं जन्मदयान् ॥ वल्लुन ॥

५१

१ गग० ध्यातव्यं कथा न कर्तव्यं यथा वक्तुं विधिः ॥ स्नात्वा स्वनि कर्म पूजक ॥ धनं लिख्यं वस्तुं वलिर्धनं
य ॥ वलिश्चाय ॥ दधमनिश्चय कर्मयाय ॥ ॥ गग० श्रीमात्री योगमर्च्यं मातां ॥ यजमान स्वस्ति कासन
कथा ॥ नृवद्वन ॥ पुत्रं कलम्भश्चिक ॥
कुरु कथा ॥ वाक् वस्तुनाय ॥ ग्रावति ॥
॥ ॥ वृत्ति यथा वक्तुं विधिः ॥ ॥

॥ गग० श्रीमात्री योगमर्च्यं मातां ॥ यजमान स्वस्ति कासन
यन्मनसि नृव मातुनी सगुणं स्नानविधि ॥
श्रीमात्री विमर्च्यं ॥ साक्षी ध्याय ॥ ॥ वीरशाय
॥